एक दो दस

(बच्चों के खेल-गीत)

संकलनः मनोज साहू 'निडर'
चित्रांकनः बोस्की जैन

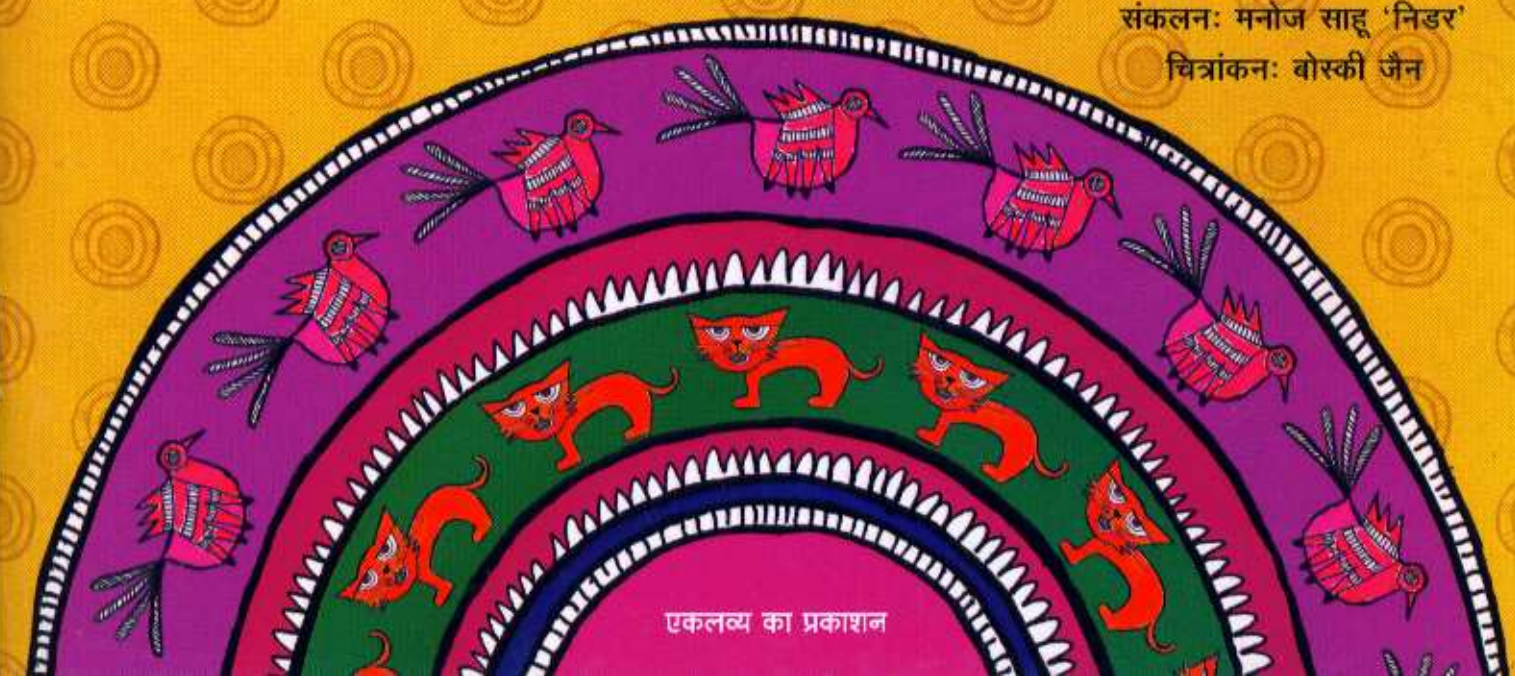

एकलव्य का प्रकाशन

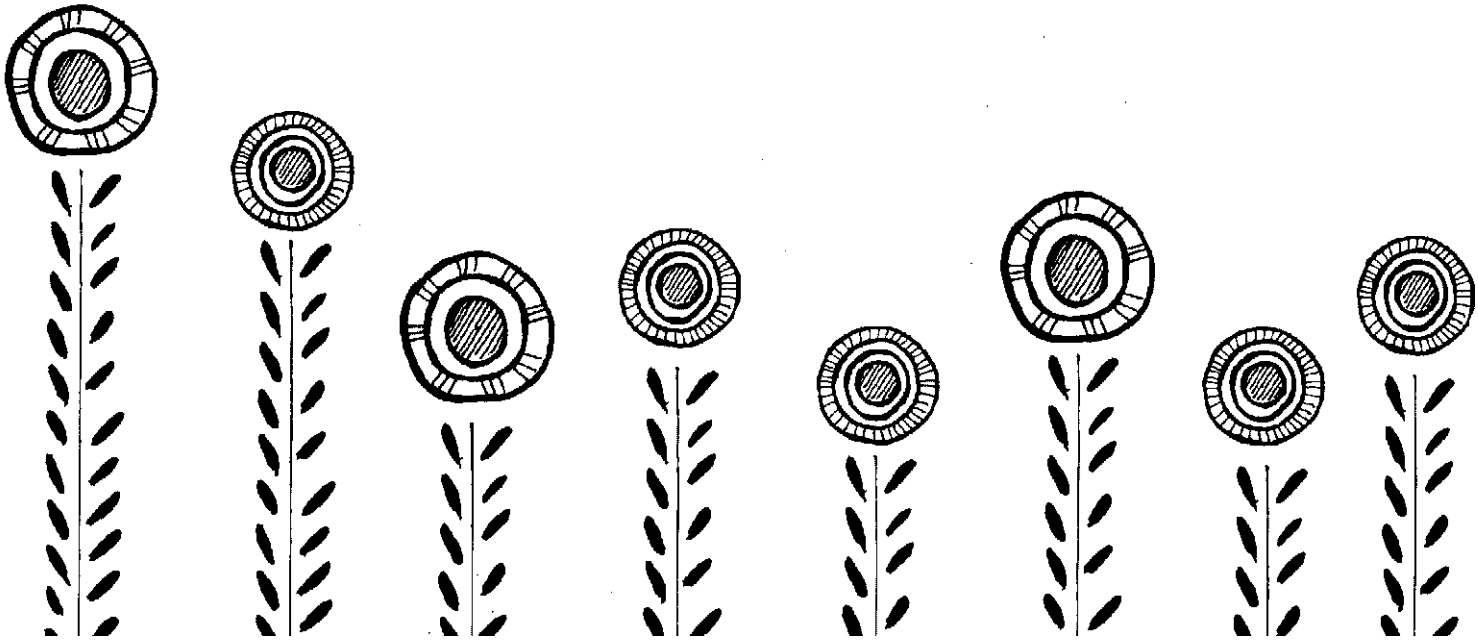

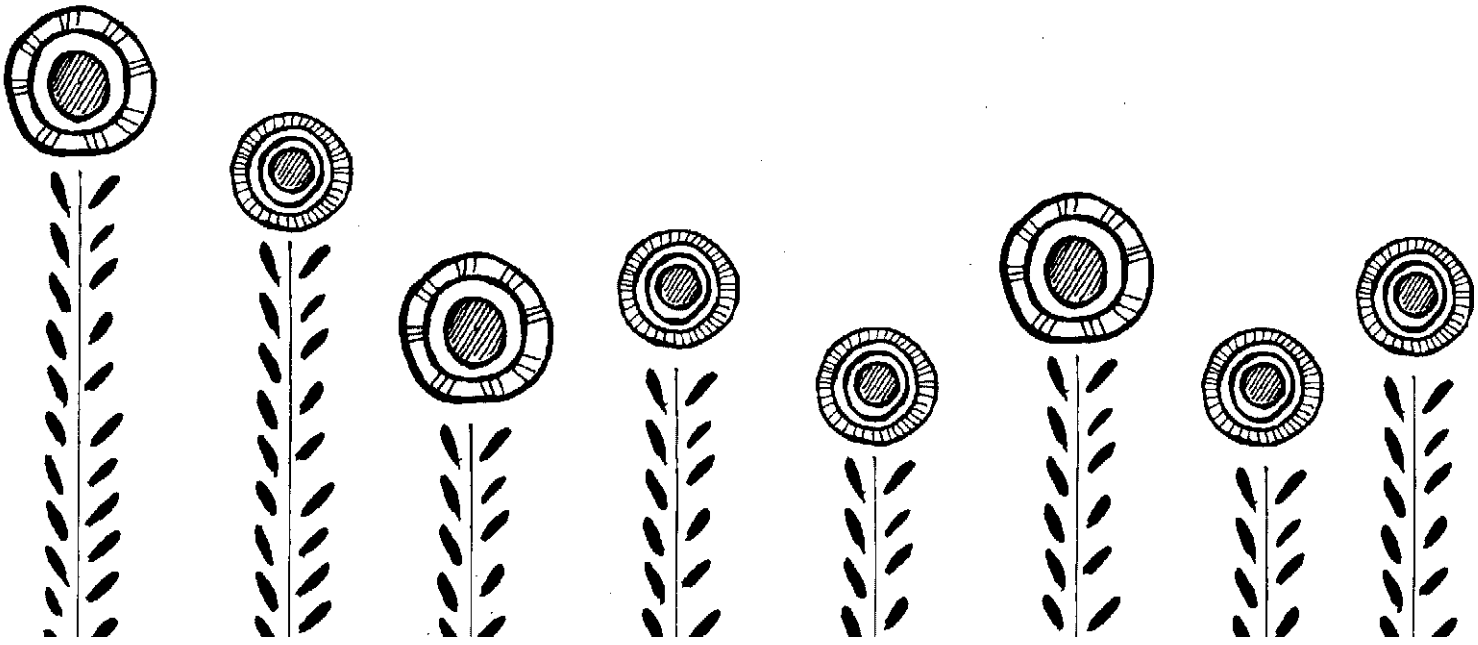

एक दो दस

(बच्चों के खेल-गीत)

संकलनः मनोज साहू 'निडर'
चित्रांकनः बोस्की जैन

एकलव्य का प्रकाशन

एक दो दस
EK DO DUS
संकलनः मनोज साहू 'निडर'
चित्रांकनः बोस्की जैन

©एकलव्य / अक्तूबर 2011 / 5000 प्रतियाँ
इस किताब के खेल-गीतों का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य तथा संकलनकर्ता से सम्पर्क करें।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़ः 80 gsm मेपलिथो और 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-906971-3-2
मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, फोनः 0755 - 255 5442

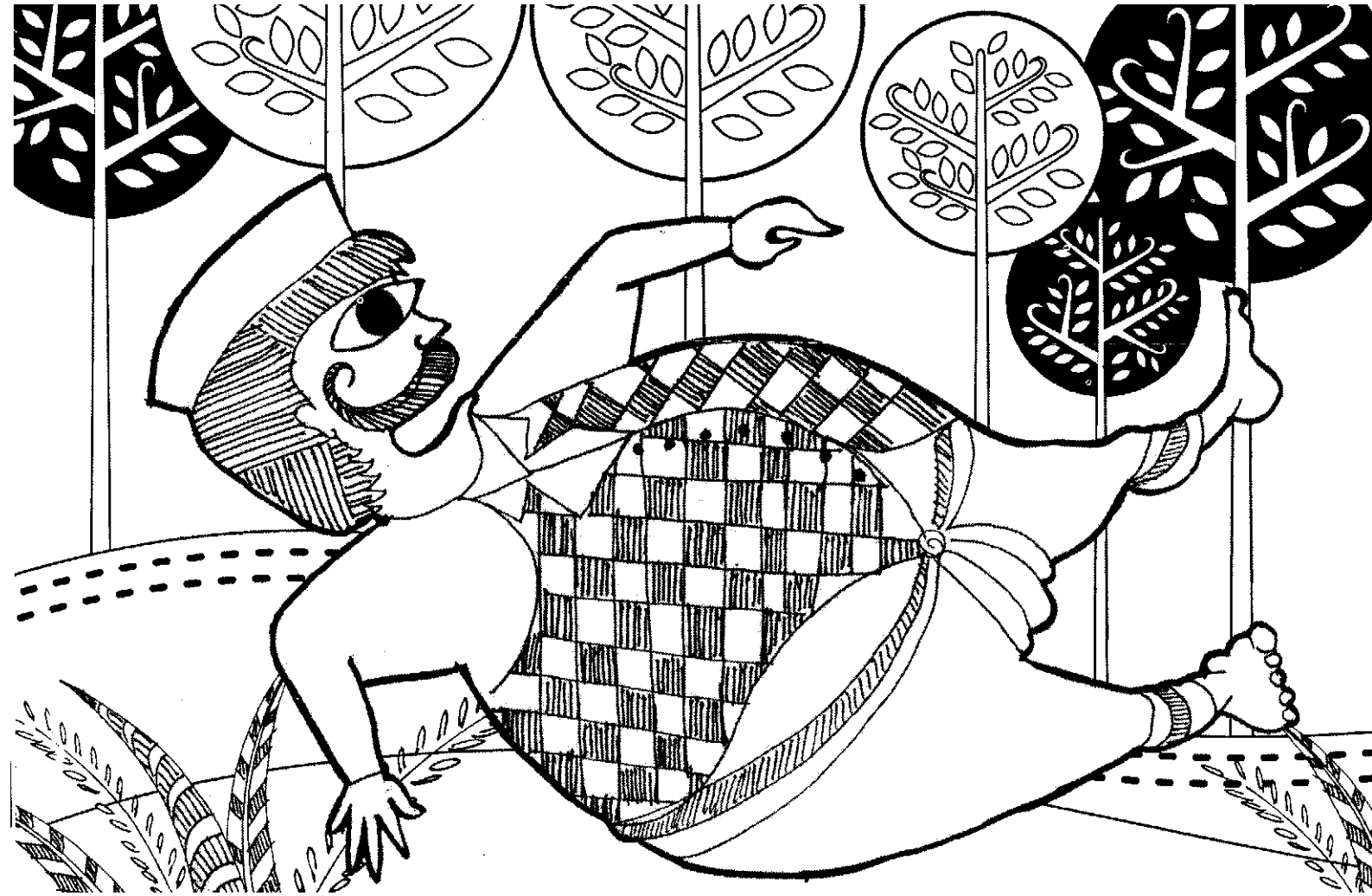

मोटा सेठ

मोटा सेठ
सड़क पर लेट
आई गाड़ी
फूट गया पेट
गाड़ी का नम्बर एट्टी एट
चल पड़ी गाड़ी इंडिया गेट

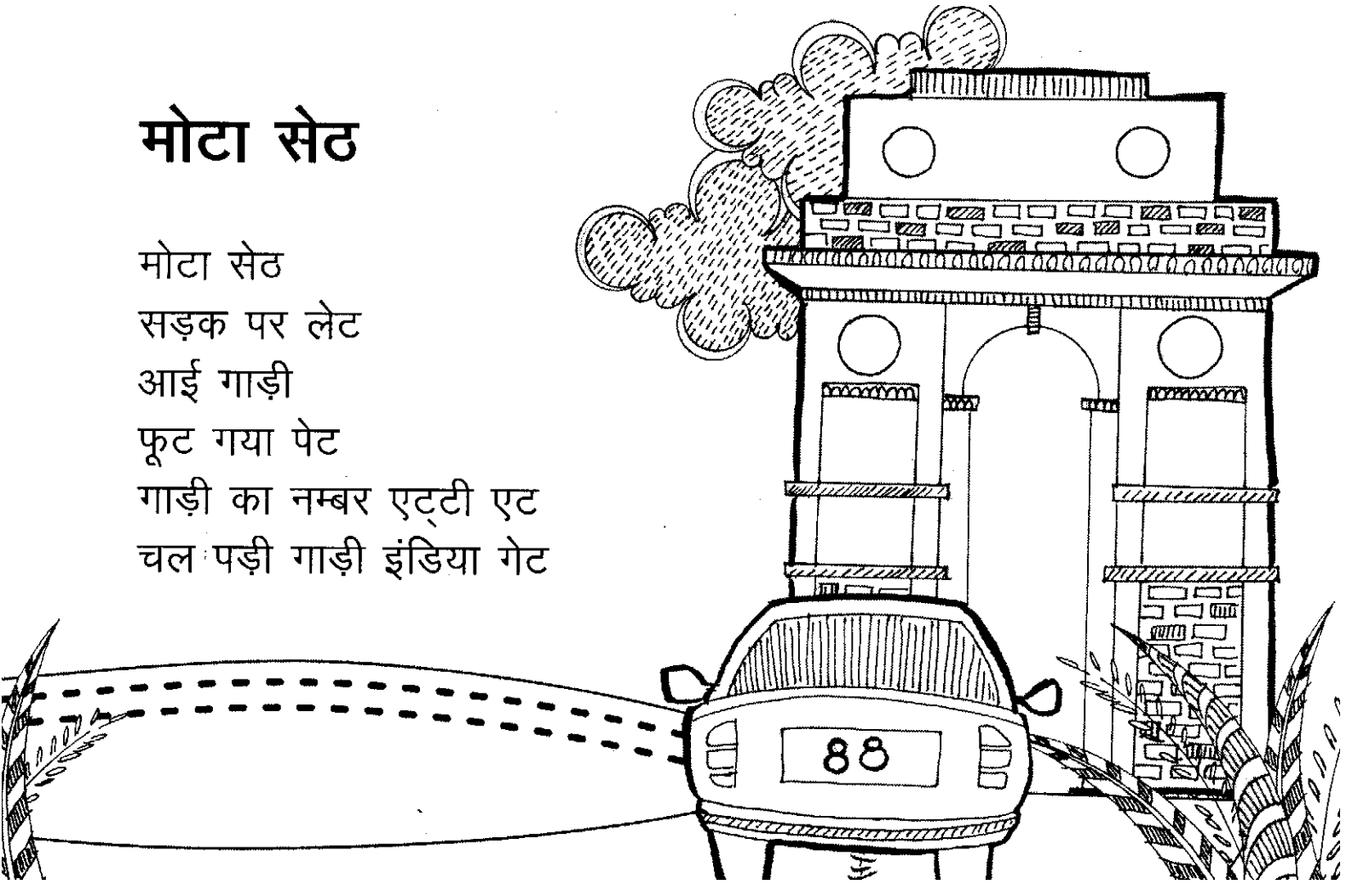

चन्दा मामा

चन्दा मामा आएँगे
दूध बतासे लाएँगे
चिड़िया चावल लाएगी
दादी खीर पकाएगी
हम सब मिलकर खाएँगे
जब चन्दा मामा आएँगे

मोटी अम्मा

मोटी अम्मा पिलपिली
बच्चा लेकर गिर पड़ी
बच्चे ने मारी लात
चल पड़ी बारात
बारात के नीचे अण्डा
खेलें गिल्ली-डण्डा

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी प्यारी मौसी
कौआ मेरा मामा
मौसी पहने फ्रॉक घाघरा
मामाजी पैजामा

काँव-काँव कौआ जी बोले
म्याऊँ-म्याऊँ बिल्ली
कौआ जी कलकत्ता जाएँ
बिल्ली जाए दिल्ली

बिल्ली खाए दूध मलाई
कौआ खाए हलुआ
बिल्ली मौसी गोरी-गोरी
कौआ मामा कलुआ

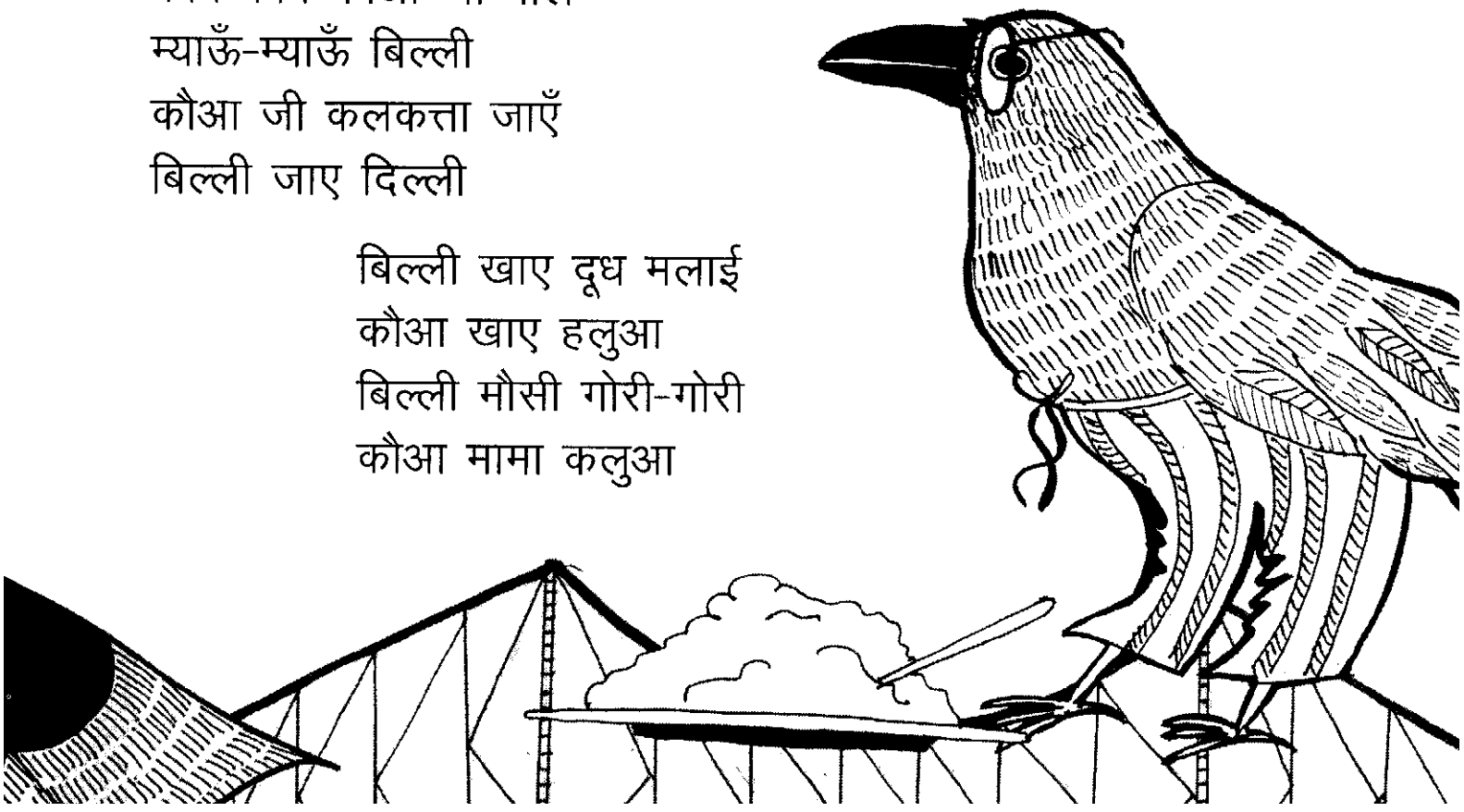

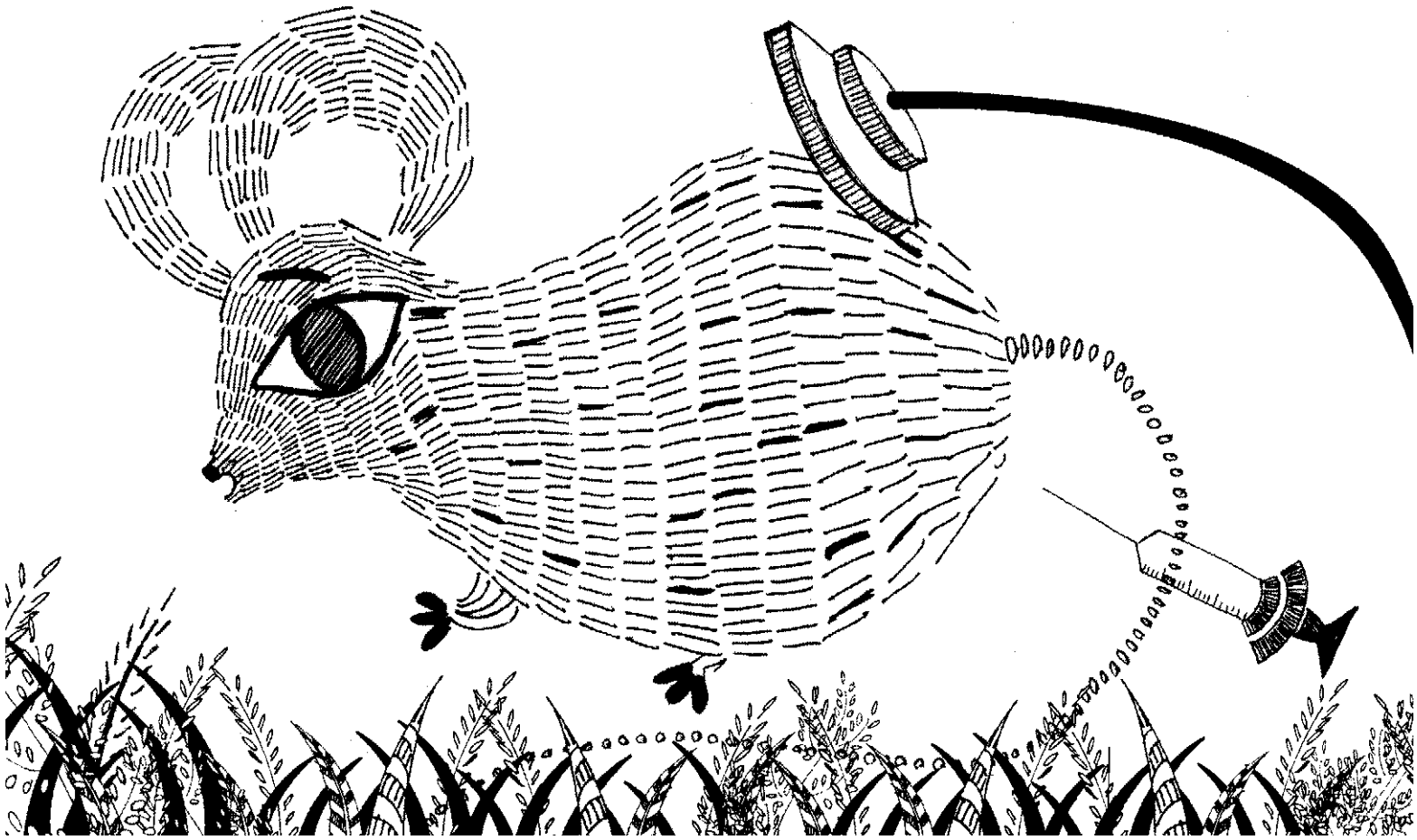

सोमवार

आज सोमवार है
चूहे को बुखार है
चूहा हुआ उदास
पहुँचा डॉक्टर के पास
डॉक्टर ने लगा दी सुई
चूहा बोला-उई!

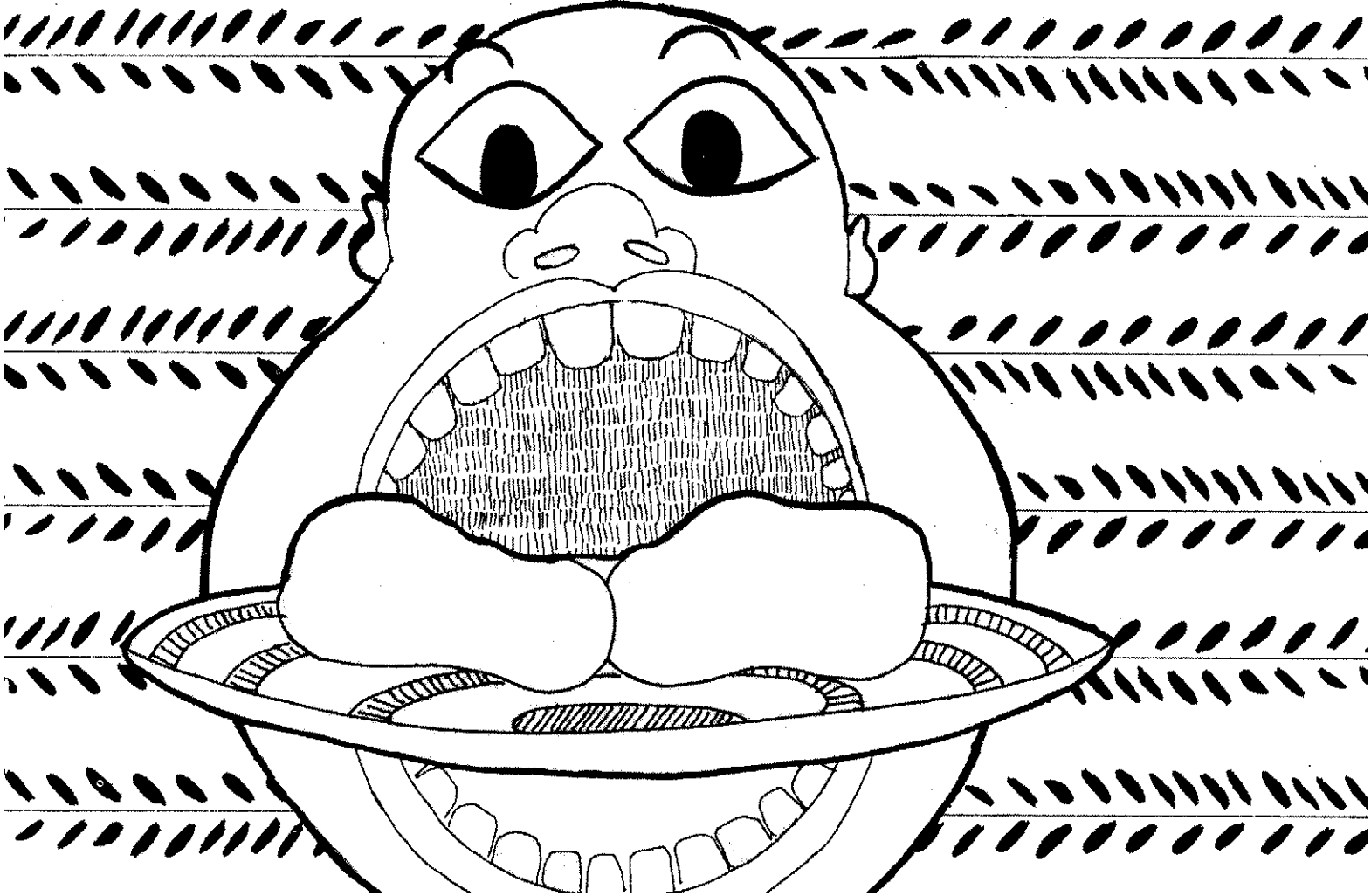

दो आलू

एक प्लेट में दो आलू
मोटू बोला मैं खा लूँ
खाते-खाते थक गया
रोटी लेकर भग गया
रोटी गिर गई रेत में
मोटू रोया खेत में

एक दो दस

एक दो दस
ऊपर से आई बस
बस के नीचे ठेला
रंग-बिरंगा मेला
मेला देखने जाएँगे
भाभी को ले जाएँगे

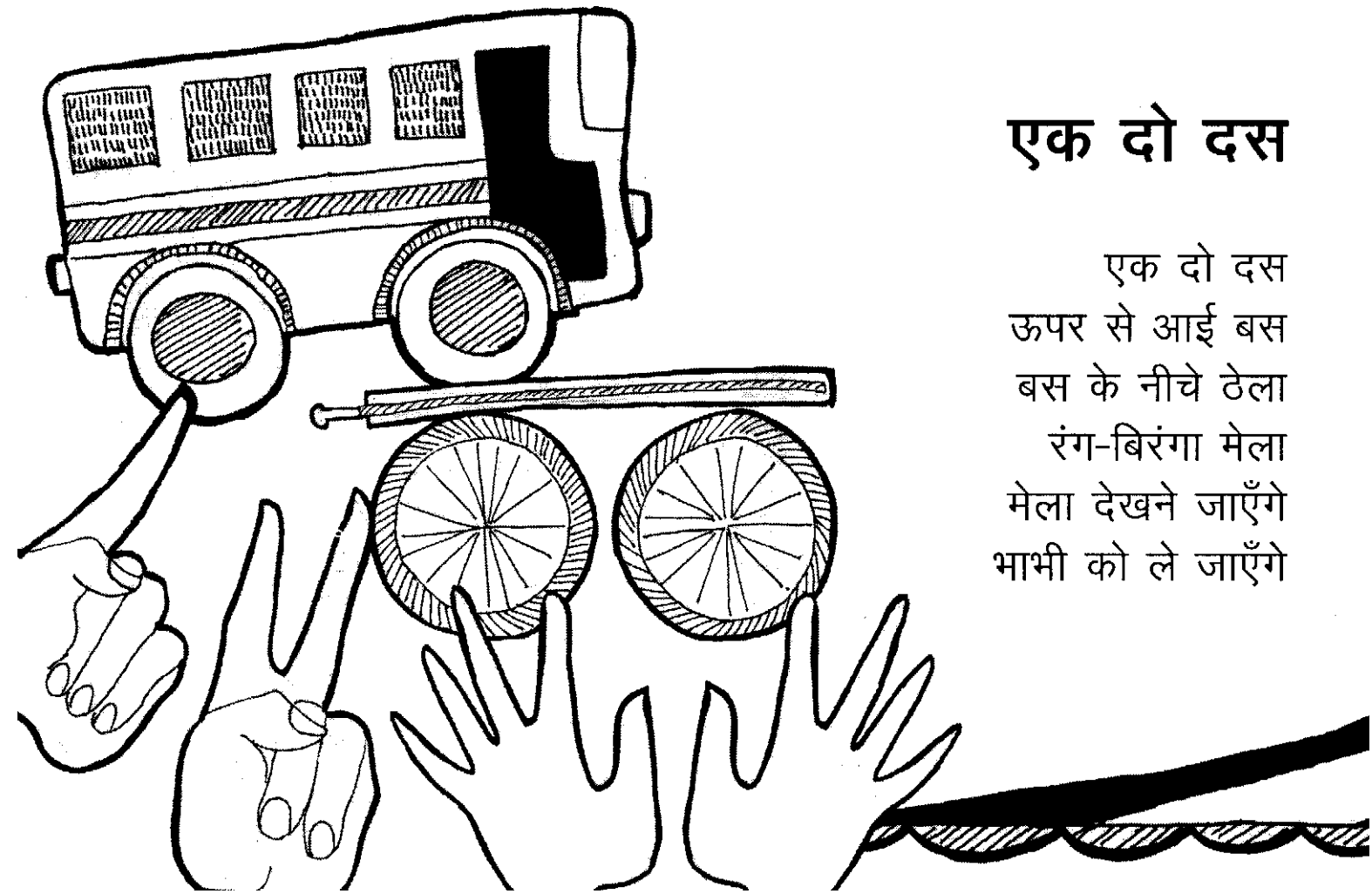

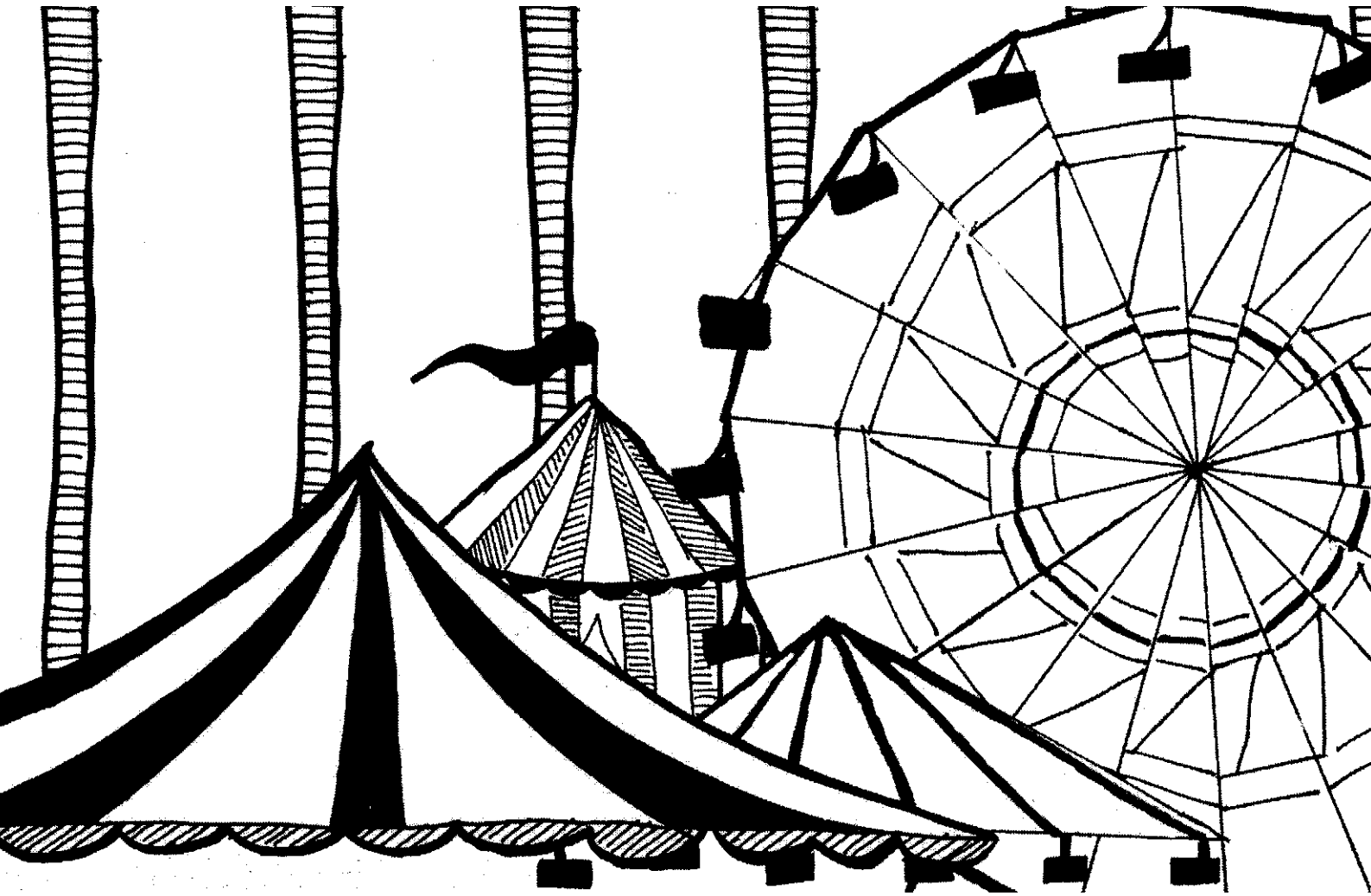

डग डग पसेरी

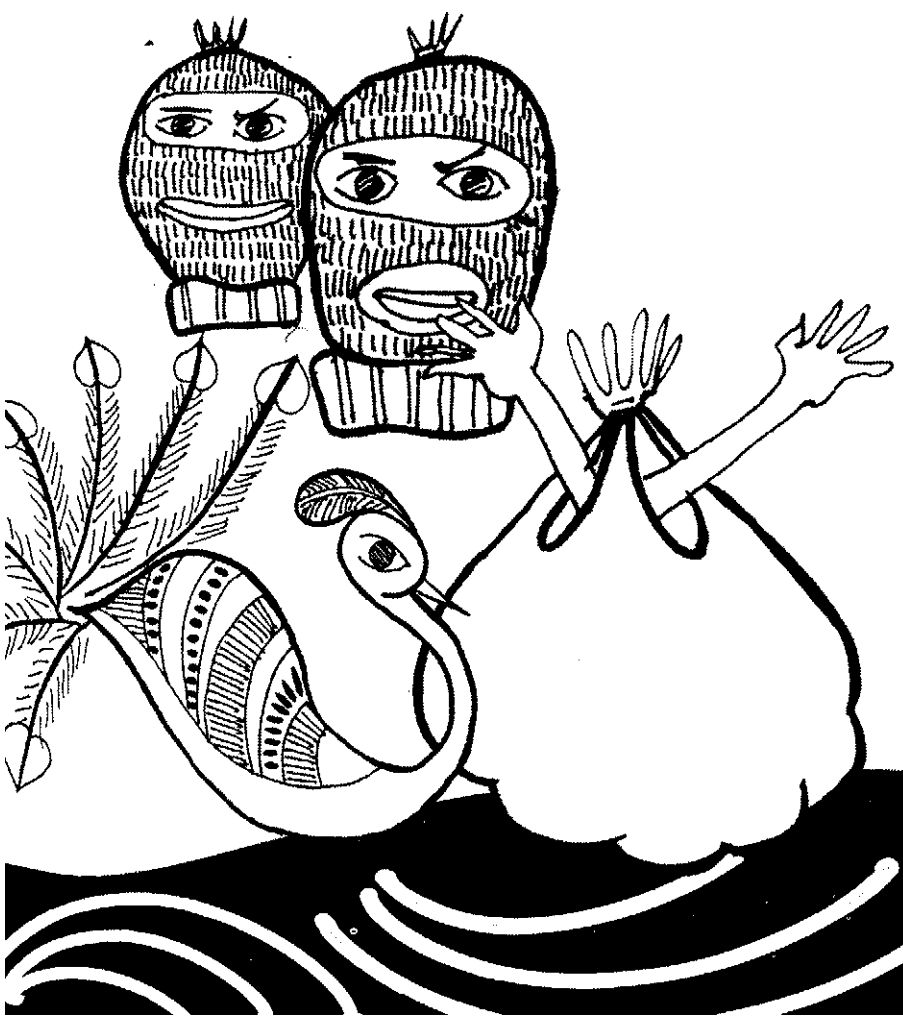

डग डग पसेरी, पान पसेरी
उड़ गए तीतर, रह गए मोर
बूढ़ी डुकरिया ले गए चोर
चोरों के घर खेती भई

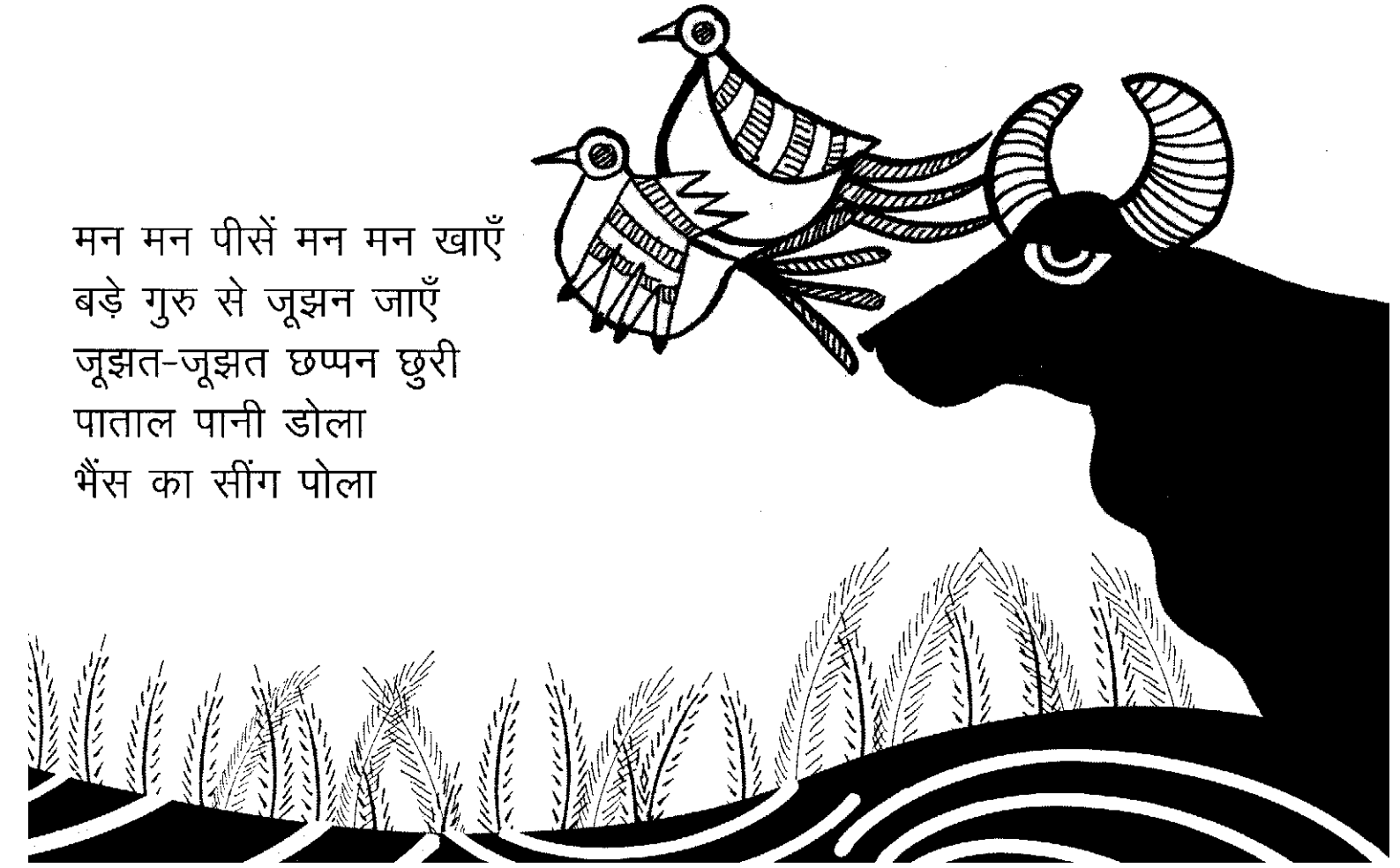

मन मन पीसें मन मन खाएँ
बड़े गुरु से जूझन जाएँ
जूझत-जूझत छप्पन छुरी
पाताल पानी डोला
भैंस का सींग पोला

टेसू बेटा

टेसू बेटा बड़े अलाल
खाते बासी रोटी दाल
बासी दाल ने किया धमाल
टेसू की मुण्डी से उड़े बाल
चिकनी मुण्डी चाय गरम
टेसू राजा बेशरम

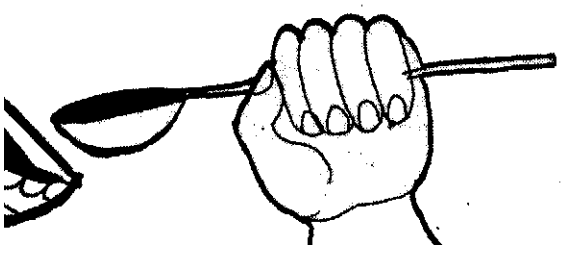

मनीराम

इत्ते से मनीराम
इतनी लम्बी मूँछ
सटक चले मनीराम
मटक चली मूँछ
जित्ते बड़े मनीराम
उनसे बड़ी मूँछ
लटक चले मनीराम
चटक चली मूँछ

टेसू के फूल

टेसू आए झूम के
टेसू छाए फूल के
टेसू की दो-चार बहुरिया
दो नाचें दो चढ़ें अटरिया
नौ मन पीसे दस मन खाए
बड़े गुरु से जूझन जाए
टेसू अकड़ करे, टेसू मकड़ करे
टेसू सौ रुपया लेकर टरे!

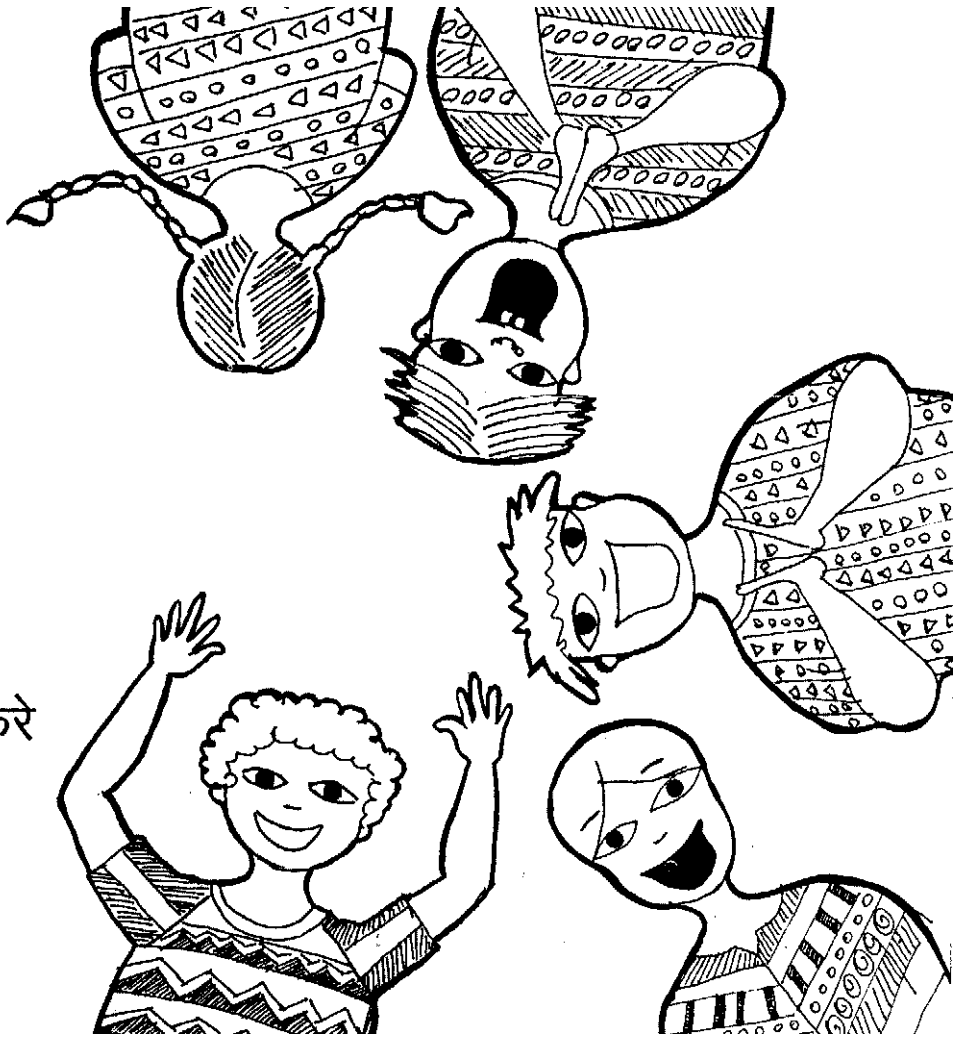

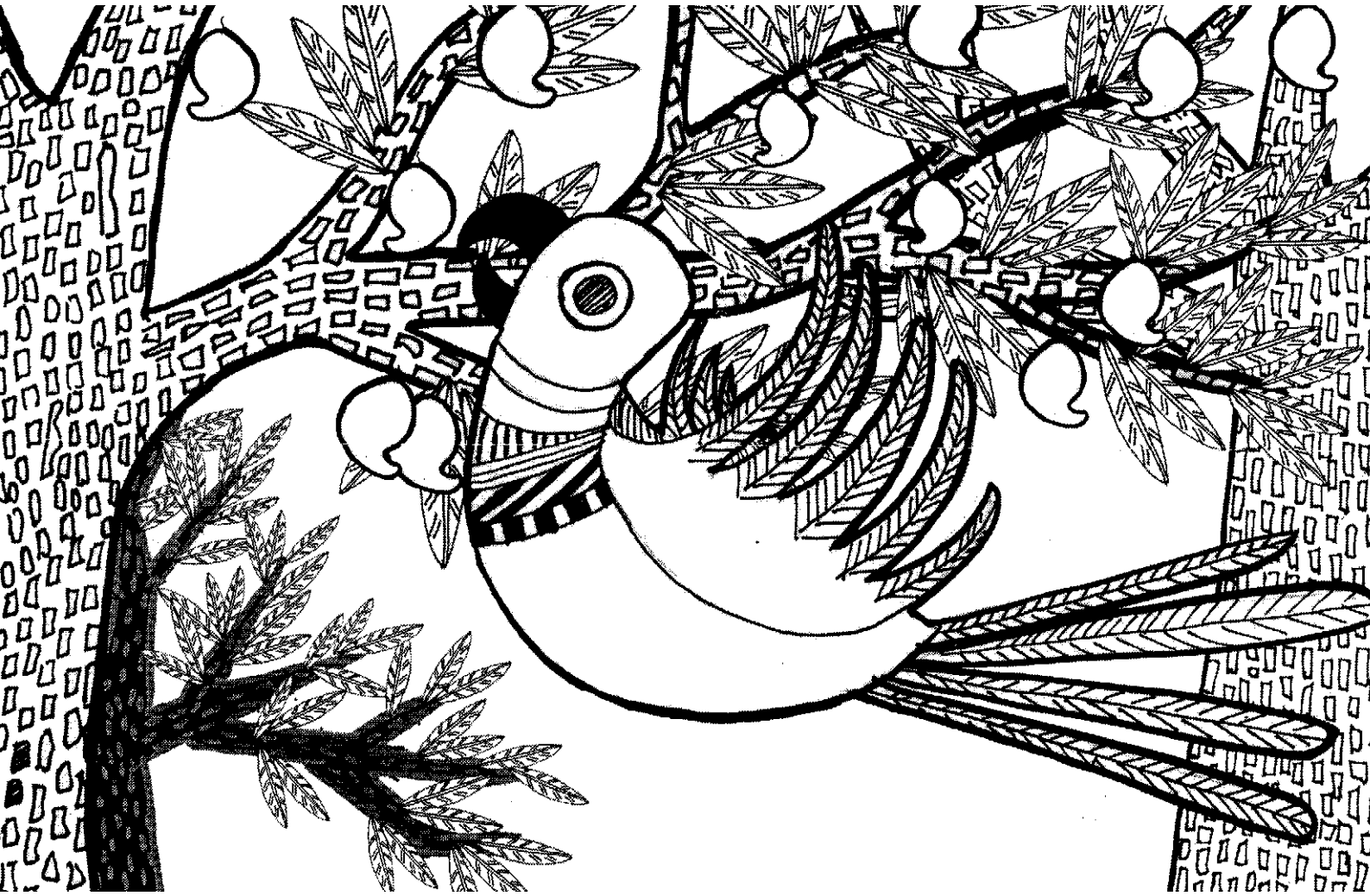

तोता

तोता बाग में जाता
आम तोड़ लाता
टूटी आम की डाली
रोया बाग का माली
खिड़की खोल के देखा
तोता बाग में देखा
माली बोला तोता आजा
तोता बोला अंकल टाटा!

न्यौता

चूहे के घर न्यौता है
देखो क्या-क्या होता है
चिड़िया चावल लाएगी
बिल्ली खीर पकाएगी

बन्दर पान बनाएगा
शेर मामा खाएगा
मुन्ना तू क्यों रोता है
तेरा भी तो न्यौता है

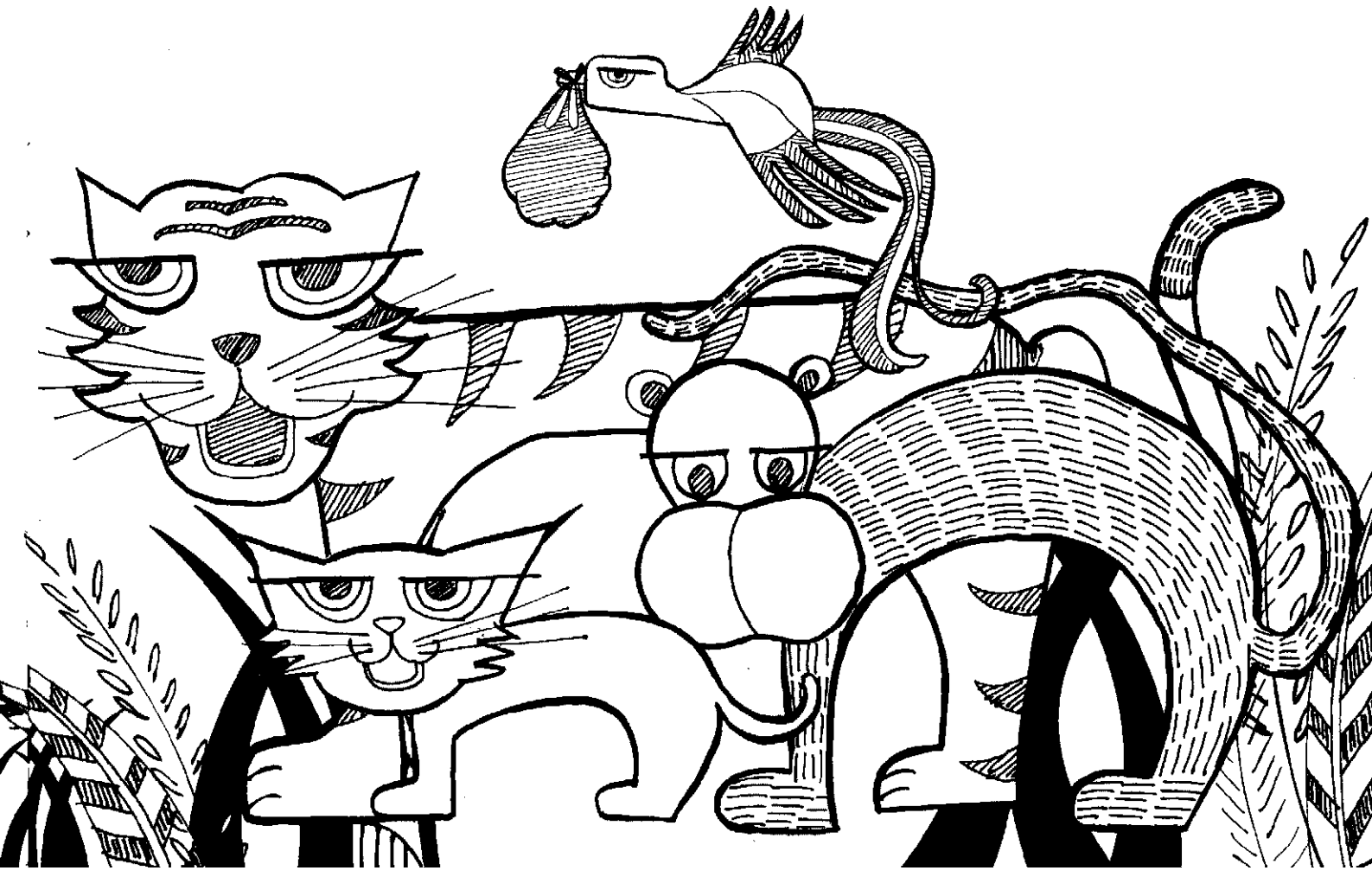

नौ मन पीसें दस मन खाएँ
बड़े गुरु से जूझन जाएँ

मनोज साहू 'निडर'
युवा शिक्षक व साहित्यकार हैं और शासकीय प्राथमिक शाला बछवाड़ा में पढ़ाते हैं। बाल-केन्द्रित शिक्षा में उनकी गहरी रुचि है।

बोस्की जैन
ग्राफिक डिज़ाइनिंग में स्नातक। भारतीय आदिवासी कला के अध्ययन में विशेष रुचि। भोपाल में निवास।

ISBN: 978-81-906971-3-2
9 788190 697132

एकलव्य

मूल्यः ₹ 20.00

A0205H
parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित